International Journal of Business Economics and Management Research
Vol. 9, Issue 8, August 2018 Impact Factor: 4.963 ISSN: (2229-4848)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

भारत सरकार की उदारीकरण नीति और भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभाव एक महत्वपूर्ण अवलोकन

प्रा. डॉ. सुनिता निठूरी रविदास

कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय

जवाहर नगर पेट्रोल पंप ठाणा जिला भंडारा

सारांश

समाजवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन की सभी क्षेत्रपर सरकार का नियंत्रण होता है। देश में सभी उद्योग सरकार के स्वामित्व में होते हैं। स्वतंत्रता के बाद, भारत सरकार ने मिश्रित अर्थव्यवस्था की नीति अपनाई लेकिन अधिकांश उद्योगों पर सरकार का नियंत्रण था और अन्य उद्योगों को सरकार द्वारा लाइसेंस दिया जाना था। एक तरह से ज्यादातर उद्योग सरकार के नियंत्रण में है। एक तरह से १९९१ तक भारतीय अर्थव्यवस्था पूरी तरह से बंद थी। १९९० तक, सुस्त उद्योग और सार्वजनिक क्षेत्र में बड़े पैमाने पर निवेश के कारण भारत का सार्वजनिक क्षेत्र का खर्च लगातार बढ़ रहा था। उसी समय, खाड़ी में युद्ध छिड़ गया, और वैश्विक बाजार मे तेल की कीमतें बढ़ गईं। इससे भारत की विदेशी मुद्रा का भंडार प्रभावित हुआ। इस समय भारत के पास कुछ दिनों के लिए पर्याप्त विदेशी मुद्रा थी। इसलिए भारत को बैंक ऑफ इंग्लैंड के पास सोना गिरवी रखकर विदेशी मुद्रा लेनी पड़ी। १९९० में, सकल घरेलू उत्पाद में राजस्व व्यय के अनुपात में २३ की वृद्धि हुई, जबकि पूंजीगत व्यय में ३० की वृद्धि हुई। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की गिरते आर्थिक पत के कारण, आईएमएफ और विश्व बैंक ने भी भारत को कठिन शर्तोंपर ऋण स्वीकृत किए थे। इसी दौरान दुनिया मे गैट के तहत डंकल प्रस्ताव की हवाएं चलने लगीं थी। चूंकि भारत गैट का सदस्य होने कारण, भारत को भी निकट भविष्य में डंकल प्रस्ताव को स्वीकार करना ही था । इनमें वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण की महत्वपूर्ण शर्तें शामिल थीं। उनमें से भारतीय उद्योगोका उदारीकरण करना एक महत्वपूर्ण शर्थ थी । भारत सरकार ने १९९१ की औद्योगिक नीति के अनुसार उदारीकरण की नीति अपनाई। समाजवादी अर्थव्यवस्था को पूरी तरह से मुक्त अर्थव्यवस्था बनाना बहुत मुश्किलें पैदा करता है। उदारीकरण का अर्थ है सरकारी नियंत्रण को कम करना और सरकारी प्रतिबंधों में ढील देना है।

प्रस्तावना

२४ जुलाई १९९१ के दिन भारत सरकार ने 'नई औद्योगिक नीति' की घोषणा की। इस नीति ने पिछले तीन दशकों में भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण नीतिगत परिवर्तन किए हैं। आर्थिक सुधार के इस मॉडल को आमतौर पर लिबरेशन, निजीकरण और वैश्वीकरण (एलपीजी मॉडल) के रूप में जाना जाता है। इस मॉडल का मुख्य उद्देश्य भारत को दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था, तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बनाना और भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व अर्थव्यवस्था के साथ प्रतिस्पर्धी बनाना था।

१९९१ में, प्रधान मंत्री नरसिम्हराव के नेतृत्व वाली सरकार में वित्त मंत्री, डॉ. मनमोहन सिंह ने अपना पहला बजट पेश किया। इस बजट में रणनीतिक बदलाव किए गए और भारत सरकार ने वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण की नीति अपनाई। भारत सरकार ने उदारीकरण के माध्यम से, औद्योगिक क्षेत्र पर नियंत्रण को कम करना शुरू कर दिया और सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों में अपने निवेश को कम कर दिया।

१९९१ के बाद सत्ता में आई सभी सरकारों ने आज तक इस निती को बनाए रखा है। वास्तव में, पिछले २५ वर्षों की सभी केंद्र सरकारोंने आर्थिक सुधारों में समय पर और उचित सुधारों को जोड़कर, औद्योगिक क्षेत्र को निजी क्षेत्र और विदेशी निवेश के लिए खोलकर उदारीकरण प्रक्रिया को समृद्ध किया है। आज 'उदारीकरण' बिना किसी एक पार्टी के स्वामित्व या एकाधिकार के पूरे देश की 'भाषा' बन गया है। बेशक, राजनीतिक हितों के लिए कई बार आर्थिक सुधारों को विफल कर दिया गया है, लेकिन सुधारों की गति कभी नहीं बदली है, और न ही किसी सरकार ने १९९० से पहले की बेकार, पुरानी नीतियों को दोहराने की अनुमति दी है। इस लेख में, मैंने भारतीय अर्थव्यवस्था पर भारत सरकार की उदारीकरण नीति के प्रभाव की समीक्षा करने का प्रयास किया है।

अध्ययन का उद्देश्य

- भारत सरकार की उदारीकरण नीति का अध्ययन करना।
- उदारीकरण नीति के संबंध में भारत सरकार द्वारा लिए गए निर्णय का अध्ययन करना।
- भारतीय अर्थव्यवस्था पर भारत सरकार की उदारीकरण नीति के प्रभाव का अध्ययन करना।

१९९१ में अपनाई गई मुक्ति नीति के मूल सिद्धांत

- भारतीय अर्थव्यवस्था को और अधिक खुला बनाने के लिए। इसमें सरकारी आदेशों के बजाय बाजार संदेशों के आधार पर औद्योगिक, व्यापार और निवेश निर्णय लेना शामिल किया है। निजी क्षेत्र के लिए अधिक उद्योगों और सेवाओं को खोलना और इन क्षेत्रों में सरकारी हस्तक्षेप को कम करना। सार्वजनिक क्षेत्र में सरकार की भूमिका को कम करना।
- अर्थव्यवस्था में निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ाना और निजी निवेश को प्राथमिकता देना। विनिर्माण क्षेत्र में सरकारी हस्तक्षेप को कम करना। विदेशी निवेश आकर्षित करने की प्रवृत्ति और प्रतिस्पर्धात्मकता; आर्थिक प्रक्रियाओं में गुणवत्ता के महत्व को बढ़ाना।
- अर्थव्यवस्था को स्थिर करने के लिए राजकोषीय घाटे को कम करने, लेन–देन को संतुलित करने, स्थिरता बनाने और मुद्रास्फीति पर नियंत्रण स्थापित करने पर जोर दिया गया।
- औद्योगिक लाइसेंसिंग नीति की समाप्ति करना। नई औद्योगिक नीति के अनुसार, देश में १८ को छोड़कर सभी उद्योगों को शुरू में सामाजिक सुरक्षा की दृष्टि से लाइसेंस दिया गया था। वर्तमान में केवल छह उद्योगों– शराब, सिगरेट, खतरनाक रसायन, रक्षा उपकरण और औद्योगिक ज्वलनशील पदार्थों को लाइसेंस दिया गया है। लगभग ८५ प्रतिशत उद्योगों को अब लाइसेंस प्राप्त है। इसका मतलब है कि इन उद्योगों को अब नई परियोजनाओं को

स्थापित करने, मौजूदा परियोजनाओं के दायरे का विस्तार करने के लिए सरकार की मंजूरी की आवश्यकता नहीं है।

- भारतीय उद्योग और सेवाओं को विदेशी निवेश के लिए खोलना। सार्वजनिक क्षेत्र के लिए निजीकरण और निर्यात नीति लागू करना। (आज, कई सार्वजनिक क्षेत्र की सरकारों का एकाधिकार समाप्त हो गया है। केवल दो ही उद्योग— रेलवे, और परमाणु ऊर्जा सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित हैं।
- लघु उद्योगों को प्रोत्साहन — नई आर्थिक नीति में प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने और उच्च स्तर की प्रौद्योगिकी प्राप्त करने के लिए, लघु उद्योगों में निवेश की सीमा रुपये से बढ़ा दी गई है। इससे लघु उद्योगों का विकास हुआ।

१९९१ सें २०१८ तक उदारीकरण प्रक्रिया की प्रगती

१९९१ से नई आर्थिक नीति की विशेषताएं लाइसेंसिंग राज खालसा शुरू हुई। बंद अर्थव्यवस्था से खुली अर्थव्यवस्था तक का सफर शुरू हुआ। निजी क्षेत्र की शुरुआत की, साथ ही सार्वजनिक क्षेत्र में विनिवेश की शुरुआत की। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) तकनीकी सहयोग के द्वार खोले। विदेशी निवेश संवर्धन बोर्ड की स्थापना की। संक्षेप में, उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण नीति की तुरही बज उठी। स्थिरीकरण के प्रयासों ने अर्थव्यवस्था की लड़खड़ाती नावों को स्थिर करने के लिए मुद्रा का अवमूल्यन किया, जिससे नई मुद्रा की छपाई रुक गई। आवश्यक आयात को छोड़कर अन्य आयातों को बंद कर दिया। विश्व बैंक से उधार लिया गया। घरेलू बचत बढ़ाने की योजना पेश की। इस प्रकार अर्थव्यवस्था के संक्रमण की दिशा में एक जोरदार यात्रा शुरू हुई। यह दीर्घकालिक संरचनात्मक परिवर्तन कार्यक्रम (एसएपी) का अग्रदूत था। नई नीति का परिणाम बढ़ी प्रतिस्पर्धा थी। घरेलू बाजार का विस्तार हुआ। बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारतीय बाजार में उतरीं। उपभोक्ताओं के पास खरददारी के अधिक विकल्प मिलने लगें। उपभोक्ता वस्तुओं की कमी समाप्त हुई और प्रौद्योगिकी और विविध आयात और निर्यात में वृद्धि हुई। विनियमन ने सरकारी हस्तक्षेप को कम कर दिया। समग्र रूप से अर्थव्यवस्था की उत्पादकता में वृद्धि हुई।

१९९१—९६ की शुरुआत में, निर्यात—आयात; औद्योगिक क्षेत्र, निवेश, कर प्रणाली में महत्वपूर्ण रणनीतिक निर्णय लिए गए, जो दूरगामी साबित हुए। १९९६—९९ भारत में राजनीतिक अस्थिरता का समय था। (तीन साल में ३ आम चुनाव हुए।) हालांकि, १९९७—९८ मे आर्थिक सुधार के उद्देश्य से चिदंबरम का बजट क्रांतिकारी था।

१९९९ से २००४ तक वाजपेयी—पर्वही सुधार की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में काफी सफल रहे। इस अवधि के दौरान निजी क्षेत्र कई बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में शामिल हो गया और सरकार ने कई महत्वपूर्ण कानून पेश किए गए। १९९१ से २००४ तक के तेरह वर्षों में आर्थिक सुधारों की आड़ में भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास भूतो न ही भविष्य ऐसा था। २००३—२००८ के बाद के ५ वर्ष भारत मे आर्थिक प्रगति के स्वर्ण युग थे। इस अवधि के दौरान, आर्थिक विकास की दर में तेजी से वृद्धि हुई; मुद्रास्फीति कम रही, निर्यात और विदेशी निवेश में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, और बचत और

निवेश दर उच्च बनी रही। साथ ही, 'इंटेंसिव केयर यूनिट' में वित्तीय घाटा और बाहरी खाते की कमी वाले मरीज़ खुली हवा में सांस लेने लगे। २००८ में वैश्विक मंदी आई थी। मंदी भारतीय अर्थव्यवस्था के साथ–साथ वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़ा झटका थी। भारत समेत कई देशों को इसके नकारात्मक परिणाम भुगतने पड़े। नतीजतन, हमारी आर्थिक विकास दर धीमी हो गई। ठीक इसी अवधि के दौरान (२००९–२०१३), राष्ट्रीय रोजगार गारंटी आदि। योजना लागू की गई। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार की स्थिति में थोड़ा सुधार हुआ है।

२०१४ के बाद से, मोदी सरकार सत्ता में आई है और आकर्षक और इस सरकारने दीर्घकालिक नीतियों की घोषणा और कार्यान्वयन किया। इस सरकारने आर्थिक नीतियों को 'विकास' और 'सुशासन' के दो स्तंभों पर पुनर्गठित किया। हालांकि, यह तय है कि उदारीकरण के मूल स्वरुप को बरकरार रखते हुए इस सरकारने उदारीकरण का रास्ता अपनाया था । इस सरकार के सभी फैसलों की सफलता को मापने का अवसर अभी भी है। हालाँकि, इस सरकारने आज एक भटकी हुई अर्थव्यवस्था को निश्चित रूप से स्थिरता और निश्चितता प्राप्त कर ली है। इस तरह पिछले तीस वर्षों की यात्रा हुई है और आज जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं, तो हमें उसमें एक सुसंगतता और निरंतरता दिखाई देती है।

उदारीकरण की नीति के परिणामस्वरूप देश में उद्योग एवं अवसंरचना क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में बेहद वृद्धि हुई। इसने औद्योगिक क्षेत्र में मंदी पर लगाम लगाई। सकल घरेलू उत्पाद में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई। विभिन्न प्रोजेक्टों की स्थापना में व्यापक निवेश और आधुनिकीकरण ने विशेष रूप से कपडा, ऑटोमोबाइल, कोयला खदान, रसायन एवं पेट्रो–रसायन, धातु, खाद्य प्रसंस्करण, सॉफ्टवेयर उद्योग इत्यादि को ऊंचा उठाया। अवसंरचना के विकास के साथ, रोजगार अवसरों में वृद्धि हुई। हालांकि, उदारीकरण के कुछ नकारात्मक प्रभाव भी परिलक्षित हुए। यह तथ्य भी सामने आया कि कुछ चुनिंदा राज्यों में ही निवेश हुआ जिससे प्रादेशिक असमानता की खाई चौड़ी हुई। कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, गुजरात, हरियाणा, महाराष्ट्र, राजस्थान और पश्चिम बंगाल में अधिक भारतीय और विदेशी निवेश हुआ। उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तराखण्ड, ओडीशा, केरल एवं कुछ उत्तर–पूर्वी राज्यों की उपेक्षा की गई जिसके परिणामस्वरूप यहां असमान औद्योगिक विकास हुआ।

उदारीकरण नीति में कुछ प्रमुख कमियाँ

- कुछ वर्षों को छोड़कर, रोजगार वृद्धि असंतोषजनक रही। उदारीकरण नीति के कारण भारत सरकार ने ठेका श्रम नीति को प्राथमिकता दी है, जिसके कारण हाल के दिनों में संगठित क्षेत्र में रोजगार में गिरावट आई है और असंगठित क्षेत्र में रोजगार में वृद्धि हुई है।
- आर्थिक नियंत्रण के अभाव ने आर्थिक असमानता को बहुत बढ़ा दिया। देश की तीव्र आर्थिक वृद्धि के बावजूद, इसका लाभ सभी लोगों तक पहुंचने के बजाय मुट्ठी भर लोगों ने ही उठाया

है। जिसके भविष्य के राजनीतिक और सामाजिक दुष्परिणामों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

- अनगिनत लोगों के दैनिक जीवन में प्रमुख मुद्दे, जैसे प्रशासन और सार्वजनिक सेवाओं से संबंधित शहरीकरण, पानी के मुद्दे, कृषि वस्तुओं की कीमत, सार्वजनिक वितरण प्रणाली और बढ़ती बेरोजगारी, अभी भी अनुत्तरित हैं।

निष्कर्ष

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि १९९१ में भारत की अर्थव्यवस्था और आज की आर्थिक स्थिति के बीच बहुत बड़ा अंतर है। आज हमारा देश विकास के एक अलग और बहुत उच्च स्तर पर आ गया है और थोड़ा अधिक स्थिर हो गया है। जिस देश की अर्थव्यवस्था पच्चीस साल पहले विश्व आर्थिक मानचित्र पर एक स्थान पर नगण्य स्वरूप मे थी। उसे अब विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्था कहा जा रहा है। क्या यह आपके और आपके देश के लिए गर्व की उपलब्धी नहीं है? वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण की नीतियों ने भारत को आज तक बहुत उदार दान दिया है। आज अपना देश दुनिया में आर्थिक सुधार के युग का एक प्रमाण है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इस उदारीकरण नीति पर आधारित सुधारों ने सभी स्तरों पर समाज की आर्थिक अपेक्षाओं और आकांक्षाओं को महत्वपूर्ण रूप से ऊपर उठाने का महत्वपूर्ण काम किया है। एक बात जो सबसे अलग है वह यह है कि उदारीकरण की ३० साल की नीतियों के बावजूद कुछ मामलों में असंतोष और लाचारी की भावना है। लोकतंत्र के ढांचे के भीतर हमारे देश ने इस अर्थव्यवस्था में तेजी से प्रगति की है। इन ३० वर्षों में, आतंकवाद ने कभी दंगे, कभी धार्मिक/जातीय दंगों को जन्म दिया है; कभी भाषा को लेकर विवाद बढ़ जाता है। तो कभी नदी के पानी को लेकर विवाद हो जाता है। उसी समय, केंद्र सरकार और कई राज्य सरकारों ने सरकार के परिवर्तन और राजनीतिक अस्थिरता का अनुभव किया। हमारी अर्थव्यवस्था इन सभी घटनाक्रमों से उबर चुकी है। आज, हमारी अर्थव्यवस्था और भी मजबूत हो गई है और भारत को आर्थिक प्रगति के अभूतपूर्व चरण में ले जाने में कामयाब रही है। यह सारा प्रभाव भारत सरकार की १९९१ की आर्थिक नीति के कारण है। जो आपको यह स्वीकार करना होगा।

संदर्भ

१) झामरे, डॉ. जी ए.— 'इंडियन इकोनॉमी', पिंपलापुरे एंड कंपनी प्रकाशक, नागपुर,

२) श्रम अर्थशास्त्र लेखक डॉ। सुधीर बोधनकर और डॉ. साहेबराव चव्हाण साईनाथ प्रकाशन

3) Dua, P. and A.I. Rasheed (1998) " Foreign Direct Investment and Economic Activity in India", Indian Economic Review, 33,pp. 153,168.

4) Foreign Direct investment Policy (2006), department of industrial policy and promotion, Ministry of Commerce and Industry, Government of India.

5) Kundra Ashok (2009), India-China: A Comparative Analysis of FDI Policy and Performance, Academic Foundation, New Delhi.

6) Mujumdar N.A. (2004) Economics Reforms Sans Development,Academic Foundation, New Delhi.

7) Satyanarayan G.,P.N.Sampangi and G.Raju (2011),Impact of Globalisation on FDI Flows in India: An Analysis, Southern Economist, 15 July.

८) वेबसाइट पर अखबारों के लेख और लेख

९) आरबीआई की रिपोर्ट